

पड़ोसन गर्ल-फ्रेंड भावना की चूत चुदाई -2

“वो पहले तो मुस्कराती रही और फिर एकदम से बोली- क्या तू मुझे फिर से नंगी देखना चाहेगा ? यह कह कर उसने मुझे अपनी बाँहों में जकड़ लिया और मेरे होंठ चूमने लगी । ...”

Story By: (ajay31)

Posted: Sunday, December 6th, 2015

Categories: [जवान लड़की](#)

Online version: [पड़ोसन गर्ल-फ्रेंड भावना की चूत चुदाई -2](#)

पड़ोसन गर्ल-फ्रेंड भावना की चूत चुदाई -2

अब तक आपने पढ़ा..

अब मैं समझ गया था कि वो उस रोज मेरे देखने से ज्यादा नाराज़ नहीं थी। अब तक मेरा डर भी काफ़ी कम हो गया था और मेरा लण्ड खड़ा होना शुरू हो गया था।

मुझे फिर मस्ती सूझी और मैंने फिर से भावना से पूछा- बताओ ना.. कि तुम उस रोज क्या कर रही थीं ?

अब आगे..

यह सुनकर वो पहले तो मुस्कराती रही और फिर एकदम से बोली- क्या तू मुझे फिर से नंगी देखना चाहेगा ?

मेरा दिल बहुत जोरों से धड़कने लगा और मैंने हल्के से कहा- हाँ, मैं फिर से आपको नंगी देखना चाहता हूँ।

वो बोली- क्या कभी तूने पहले भी यह काम किया है ?

तो मैंने कहा- नहीं..

उसने बड़े ही कामुक अंदाज़ में कहा- आ मेरे पास.. आज मैं तुझको सब सिखाऊँगी..

मैं एकदम से हैरान हो गया।

उसने यह कह कर मुझे अपनी बाँहों में जकड़ लिया और मेरे होंठ चूमने लगी। मैंने भी उसको कस कर पकड़ लिया और उसके होंठ चूमने लगा। उसकी जीभ मेरे मुँह में घुसने की कोशिश कर रही थी.. तो मैंने अपना मुँह खोल कर उसकी जीभ चूसनी शुरू कर दी।

इधर मेरा लण्ड भी काले नाग की तरह फुंफकार रहा था और पैंट फाड़ कर बाहर आने के लिए मचल रहा था, मैंने एक हाथ बढ़ा कर भावना की तनी हुई चूचियों पर रख दिया और

बड़ी बेताबी के साथ उनको मसलने लगा ।

भावना का सारा शरीर एक भट्टी की तरह तप रहा था और हमारी गर्म साँसों एक-दूसरे की साँसों से टकरा रही थीं ।

ऐसा लग रहा था कि मैं बादलों में उड़ा जा रहा हूँ । अब मेरे से सब नहीं हो रहा था । मैंने उसकी चूचियों को मसलते हुए अपना दूसरा हाथ उसके चूतड़ों पर रख दिया और उनको बहुत बुरी तरह मसलने लगा ।

भावना के मुँह से हल्की सिसकारने की आवाज़ निकली- ओह.. आइईई.. ज़रा आराम से मसलो न.. मैं कोई भागी नहीं जा रही हूँ.. तेज़ी के साथ मसलने पर दर्द होता है ।

लेकिन मैं अपनी धुन में ही उसके चूतड़ों को मसलता रहा और वो 'ओह.. आइईई..' करती रही ।

ये आवाज़ें सुन कर मेरा लण्ड और भी बेताब हो रहा था और पैन्ट के अन्दर से ही उसकी नाभि के आस-पास टक्कर मार रहा था ।

मैंने उसके कान में फुसफुसाते हुए कहा- अपनी सलवार कमीज़ उतार दो..

तो पहले तो वो मना करने लगी.. लेकिन जब मैंने उसकी कमीज़ ऊपर को उठाना शुरू की..

तो उसने कहा- रूको बाबा.. तुम तो मेरे बटन ही तोड़ दोगे.. मैं ही उतार देती हूँ..

यह कह कर उसने अपनी कमीज़ के बटन खोल दी और अपनी कमीज़ उतार दी, अब वो सिर्फ़ काली ब्रा और सलवार में खड़ी थी ।

मैं उसको देखता ही रह गया ।

उसकी बगलों में एक भी बाल नहीं था.. शायद रविवार को ही बगल के भी बाल साफ़ किए थे ।

मैंने अपना दाहिना हाथ उठा कर उसकी बाईं वाली चूची पर रख दिया और ब्रा के ऊपर से दबाने लगा और दूसरे हाथ को मैं उसकी गाण्ड पर फिरा रहा था ।

भावना का चेहरा वासना से लाल सुर्ख हो गया था और उसके मुँह से सिसकारियाँ निकल रही थीं, वो लगातार 'आह.. अह.. उफ़..' करे जा रही थी।

इस समय मेरे दोनों हाथ उसकी चूचियों और गाण्ड को मसलने में व्यस्त थे और होंठ उसके होंठों को चूस रहे थे। मैंने उसको पलंग पर लिटा दिया और मैं उसके ऊपर चढ़ गया, फिर उसकी कमर के नीचे हाथ ले जाकर सर को ऊपर उठाया और उसके होंठ चूसने लगा। मैं इतना जोश में था कि कई बार उसने कहा- ज़रा आहिस्ते चूसो.. कई बार तो एक-दूसरे के होंठ चूसते-चूसते हमारे दोनों के मुँह से 'गूऊ.. न.. गू..' की आवाज़ निकल जाती।

अब मैं पीछे से उसकी ब्रा का हुक खोलने लगा था, थोड़ी सी मेहनत के बाद मैंने उसे खोल ही दिया और हुक खुलते ही उसकी चूचियाँ एकदम से ऊपर को उछलीं.. मानो उनको ज़बरदस्ती दबा कर क़ैद किया गया था और अब उनको आज़ादी मिल गई हो। उसकी चूचियाँ बहुत ही गोरी-चिट्ठी और एकदम सख्त और तनी हुई थीं, निप्पल बाहर को उठे हुए और एकदम तने हुए थे।

जैसे ही मैंने एक हाथ से उसकी एक चूची मसलनी शुरू की और दूसरी को अपने मुँह से चूसने लगा.. तो भावना की हालत और खराब हो गई.. अब वो ज़ोर से कसमसाने लगी, उसके मुँह से 'सस्सई ईईईई.. ओह.. मेएररी माआअ.. मररररर.. गइईई रीईईई..' जैसी आवाज़ निकलने लगी।

इधर मेरा लण्ड अभी तक पैन्ट में ही क़ैद था और उछल कूद कर रहा था। उसकी सलवार के ऊपर से ही उसकी चूत पर टक्कर मार रहा था।

अब मैंने मुँह से उसकी एक चूची चूसते हुए और एक हाथ से चूची मसलते हुए दूसरे हाथ से उसकी सलवार का नाड़ा खोल दिया।

उसने भी कोई देर नहीं की तथा अपने चूतड़ ऊपर करके मुझे अपनी सलवार उतारने में मदद कर दी।

अब वो सिर्फ़ पैंटी में ही बची थी.. उसने गुलाबी रंग की पैंटी पहन रखी थी जो कि चूत के ऊपर से कुछ गीली हो रही थी। लगता था कि उसकी चूत ने उत्तेजना के कारण पानी छोड़ना शुरू कर दिया था।

जैसे ही मैंने उसकी चूत को पैंटी के ऊपर से सहलाना शुरू किया.. तो वो काँपने से लगी और मस्ती में आकर बोली- मुझको तो नंगी कर दिया है.. और मेरा सब कुछ देख लिया है साले.. लेकिन तुम अपना लण्ड अभी तक पैन्ट में छुपाए हुए हो..

यह कह कर उसने पैन्ट की जिप खोल दी और मेरा लण्ड एकदम फनफनाता हुआ बाहर निकल आया।

मेरा लण्ड देखते ही भावना एकदम मस्त हो गई और बोली- हे राम.. तुम्हारा लण्ड तो काफ़ी लंबा और मोटा है..

मेरा लण्ड लगभग 8 इंच लंबा होगा और 3.5 इंच मोटा होगा।

‘वाह.. तुम्हारे साथ तो बहुत ही मज़ा आएगा.. मैं तो तुम्हें अभी तक बच्चा ही समझती थी.. मगर तुम तो एकदम जवान हो.. एक खूबसूरत लण्ड के मलिक हो.. और बहुत अच्छी तरह से चुदाई की ताकत रखते हो।’

अब उसने मेरे सारे कपड़े एक-एक करके उतार दिए और मेरे तने हुए लण्ड को सहलाने लगी। मेरे लण्ड का सुपारा एकदम से लाल हो रहा था और काफ़ी गर्म था।

अब मैंने भी उसकी चूत पर से उसकी पैंटी उतार दी और देखा कि आज उसकी चूत पर एक भी बाल नहीं है और एकदम साफ चूत है।

मैंने कहा- उस रोज तो तुम्हारी चूत पर बहुत झांटें थीं और आज एकदम साफ है.. और

किसी हीरे की तरह चमक रही है..

वो बोली- मैं तुम्हारी तरह नहीं हूँ.. जो अपनी झांटों और बगल का जंगल साफ ही नहीं करता हो.. यह मुझको अच्छा नहीं लगता और तुम भी यह सब साफ किया करो।

मैंने कहा- मैंने तो आज तक अपनी झांटों और बगलों के बाल साफ ही नहीं किए हैं और मुझे डर लगता है कि कहीं ब्लेड से कट ना जाए..

तो वो खिलखिला पड़ी और फिर बोली- अगर ऐसी बात है.. तो बगल के बाल और लण्ड से झांटों को मैं शेव कर दूँगी।

मैंने एक उंगली उसकी चूत के छेद में डाल दी.. छेद काफी गीला था और एकदम चिकना हो रहा था।

उसकी चूत एकदम गुलाबी थी.. पानी निकलने के कारण उसमें काफी चिकनाहट थी।

मैंने उसकी चूत में एक उंगली अन्दर-बाहर करनी शुरू कर दी और कभी-कभी मैं उंगलियों के बीच उसके दाने को भी मसल देता था।

उसके मुँह से सिसकारियाँ निकल रही थीं, वो 'आहह.... आहह.... हाईईई..?' कर रही थी और कह रही थी- ज़रा ज़ोर से उंगली को अन्दर बाहर कर..

मैं और तेज़ी के साथ करने लगा.. उसके मुँह से सिसकारियों की आवाज़ बढ़ती ही जा रही थी और वो लगातार, 'हाय... मर गई..' कर रही थी।

तभी वो अपनी कमर तेज़ी के साथ हिलाने लगी और अटक-अटक कर बोली- हाअ.. तेजज़ज़.. से अन्दर-बाहर करो.. हाईईईई ईई मेररा.. निकला.. आहह..'

यह कह कर वो एकदम शान्त सी हो गई और मैंने देखा उसकी चूत में से पानी निकल रहा था.. जिससे चादर गीली हो गई थी।

मैंने कहा- आपका तो निकल गया ?

'हाँ.. मैं झड़ गई हूँ..!'

कहानी के अगले हिस्से में उसकी चुदाई हो पाई या नहीं इसका मदमस्त वाकिया विस्तार से लिखूँगा..

मेरे साथ अन्तर्वासना से जुड़े रहिए.. जल्द मुलाकात होगी ।

कहानी जारी है ।

sexy.ajay31@gmail.com

